शोध

10

अहमदाबाद के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की स्वप्रेरणा का अध्ययन

प्रवीण वी. शुंजाल*

प्राथमिक शिक्षा संपूर्ण शिक्षा का आधारस्तंभ है। इसलिए प्राथमिक शिक्षा गुणात्मक होनी चाहिए। गुणात्मक प्राथमिक शिक्षा देने की ज़िम्मेदारी प्राथमिक शिक्षकों की है। इसलिए जो भविष्य में प्राथमिक शिक्षक बनने वाले हैं, उन प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में भी गुणात्मक शिक्षण होना चाहिए और गुणात्मक शिक्षण वही प्राप्त कर सकता है जिसमें उच्च स्वप्रेरणा हो। इसलिए प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की स्वप्रेरणा का अध्ययन करने का एक नम्र प्रयास इस शोध अध्ययन में किया गया है।

प्रस्तावना

व्यक्ति के वैयक्तिक और सामाजिक विकास का आधारस्तंभ गुणात्मक शिक्षा है। शिक्षा के निष्णात हमेशा असरकारक अध्ययन-अध्यापन, मूल्यांकन, पद्धतियाँ, मूल्यांकन के साधन आदि पर शोध करते रहते है। समग्र विश्व में शिक्षा का प्रचंड प्रसार हो रहा है और उसकी माँग दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में संशोधन की सर्वाधिक आवश्यकता है।

प्राथमिक शिक्षा शिक्षा का मूल आधारस्तंभ है। विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की नींव प्राथमिक शिक्षा में रखी जाती है। इसलिए प्राथमिक शिक्षा गुणात्मक और प्रेरणादायी होनी चाहिए। इस प्रकार की शिक्षा प्राथमिक शिक्षा देने वाले शिक्षक ही दे सकते हैं। प्राथमिक स्कूल में शिक्षक बनने हेतु प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में उनके विद्यार्थियों को प्रेरणा देने की शक्ति होनी चाहिए। इसलिए उनमें स्वप्ररेणा भी होनी चाहिए तभी वह विद्यार्थियों को गुणात्मक और प्रेरणादायी शिक्षा दे सकते हैं। इसलिए प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की स्वप्ररेणा का अध्ययन करना ज़रूरी एवं महत्वपूर्ण है।

* *अध्यापक*, उपमन्यु एजुकेशन कॉलेज, अहमदाबाद, गुजरात

1.1 अध्ययन के उद्देश्य

1. अहमदाबाद के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की स्व-प्रेरणा का अध्ययन करना।
2. सामान्य और विज्ञान प्रवाह के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की स्व-प्रेरणा का अध्ययन करना।
3. सामान्य जाति और अनुसूचित जाति के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की स्व-प्रेरणा का अध्ययन करना।

1.2 अध्ययन की परिकल्पना (Hypothesis)

1. सामान्य और विज्ञान के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की स्व-प्रेरणा के प्राप्तांकों के मध्यमानों के बीच सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. सामान्य जाति और अनुसूचित जाति के प्राथमिक शिक्षा के प्रशिक्षणार्थियों की स्व-प्रेरणा के प्राप्तांकों के मध्यमान के बीच सार्थक अंतर नहीं होगा।

1.3 न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अहमदाबाद शहर के 350 प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को गुच्छा पद्धति (Cluster Method) से न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

1.4 शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की स्व-प्रेरणा का अध्ययन करने के लिए स्व-प्रेरणा के क्रम मापदंड की रचना की गई। उसमें सकारात्मक और नकारात्मक विधानों को शामिल किया गया है। इस शोध अध्ययन के लिए कोई प्रमाणित उपकरण उपलब्ध न होने से संशोधक ने स्वनिर्मित उपकरण का उपयोग किया।

1.5 प्रदत्त संकलन की प्रविधि

न्यादर्श और उपकरण निर्धारित करने के बाद संशोधक ने अहमदाबाद शहर के 350 प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को खुद उपस्थित रहकर स्व-प्रेरणा क्रम मापदंड देकर आँकड़े एकत्र किया।

1.6 प्रदत्त विश्लेषण का पृथक्करण

अध्ययन के उद्देश्य और परिकल्पनाओं का अध्ययन करने के लिए स्व-प्रेरणा क्रम मापदंड के प्राप्तांक प्राप्त किए गए और उसके आधार पर मध्यमान, मानक विचलन, टी-मूल्य प्राप्त करके अंकशास्त्रीय पृथक्करण किया गया।

1.7 विश्लेषण एवं निष्कर्ष

शोध अध्ययन के उद्देश्य और परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं निष्कर्ष निम्नलिखित है -

1. सामान्य और विज्ञान के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के स्व-प्रेरणा प्राप्तांकों के मध्यमानों के बीच सार्थक अंतर नहीं होगा।

निम्न दी गई तालिका-1 से स्पष्ट है कि सामान्य प्रवाह के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थी का स्व- प्रेरणा के प्रति मध्यमान 172.0 है और विज्ञान प्रवाह के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 171.21 है और उसका टी-मूल्य 0.40 है जो सार्थकता के

तालिका - 1

प्रवाह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मूल्य	सार्थकता स्तर
सामान्य	286	172.0	13.66	0.40	सार्थक नहीं
विज्ञान	64	171.21	15.73		

स्तर 0.05 के 1.96 के मूल्य से कम है। इसलिए परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है और प्रतीत होता है कि सामान्य और विज्ञान के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के स्व-प्रेरणा के प्राप्तांकों के मध्यमानों के बीच सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका - 2

प्रवाह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मूल्य	सार्थकता स्तर
सामान्य जाति	179	174.43	11.65	3.55	0.01
अनुसूचित जाति	171	169.16	15.52		

2. सामान्य जाति और अनुसूचित जाति के प्राथमिक शिक्षा के प्रशिक्षणार्थियों की स्व-प्रेरणा के प्राप्तांकों के मध्यमान के बीच सार्थक अंतर नहीं होगा।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है, की सामान्य जाति के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का स्व-प्रेरणा के प्रति मध्यमान 174.43 है और अनुसूचित जाति के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 169.16 है और उनका टी-मूल्य 3.55 है। जो सार्थकता के स्तर 0.01 के 2.96 के मूल्य से अधिक है। इसलिए 0.01 कक्षा पर परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है और प्रतीत होता है कि सामान्य जाति और अनुसूचित जाति के प्राथमिक शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के स्व-प्रेरणा में अंतर है।

निष्कर्ष

1. सामान्य और विज्ञान के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की स्वप्रेरणा के प्राप्तांकों के मध्यमानों के बीच अंतर नहीं है।
2. सामान्य जाति और अनुसूचित जाति प्रवाह के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की स्वप्रेरणा के प्राप्तांकों के मध्यमानों के बीच अंतर है और वह सामान्य जाति के प्रशिक्षणार्थियों के हक में है।

1.7 शैक्षणिक उपयोगिता एवं सुझाव

शिक्षा का गुणात्मक स्तर शिक्षकों की गुणवत्ता के स्तर पर निर्भर है। प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थी जो भविष्य में छोटे बच्चों में गुणात्मक शिक्षण की नींव रखने वाले हैं उनमें स्वप्रेरणा होनी आवश्यक है। जिसमें स्वप्रेरणा है वह गुणात्मक शिक्षण दे सकता है। इस तरह शिक्षा में शिक्षकों में स्वप्रेरणा होनी अनिवार्य है। इसलिए मेरे सुझाव निम्नानुसार हैं -

1. सामान्य और विज्ञान प्रवाह के प्रशिक्षणार्थियों में स्वप्रेरणा का अधिक-से-अधिक विकास हो ऐसे प्रयत्न करने चाहिए।
2. अनुसूचित जाति के प्रशिक्षणार्थियों में स्वप्रेरणा का विकास हो इसलिए विविध कार्यों या परियोजना का आयोजन किया जाना चाहिए।

इस प्रकार स्वप्रेरणा गुणात्मक शिक्षा के लिए अनिवार्य है। इसका अधिक-से-अधिक विकास ही वर्तमान शिक्षा की माँग है।

संदर्भ

- देसाई, के. जी. और शाह, आर. पी., 1984, *शैक्षणिक परिभाषा और विभावना*, युनिवर्सिटी ग्रंथनिर्माण बोर्ड, अहमदाबाद।
- शाह, दीपिका, 2004, *शैक्षणिक संशोधन*, युनिवर्सिटी ग्रंथनिर्माण बोर्ड, अहमदाबाद।

लिज़ा किन्डरगार्टन गई जहाँ अध्यापिका ने उसको पढ़ना सिखाने की कोशिश नहीं की ना ही उसे उस ओर धकेला! वहाँ बहुत सारी किताबें, साईन, चिटियाँ और ऐसी ही कई उपयोगी सामग्रियाँ थीं... उसने अपने आप को पढ़ना सिखा दिया! किसी को पता नहीं कि आखिर उसने यह किया कैसे? दरअसल, यह एक ऐसी चीज़ है जिसके बारे में हम सभी कम ही जानते हैं! कई हज़ार बच्चे प्रत्येक वर्ष स्वयं पढ़ना सीख जाते हैं! बेहतर होगा कि हम इस बात को जानने की कोशिश करें कि ऐसे कितने बच्चे हैं! इन्होंने पढ़ना कैसे सीख लिया!

जॉन होल्ट